ओ३म्

वेदों की खुशबू

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 61	Year 6	Volume 9	June 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

When your mind is busy with benevolent plans, negativity keeps distance

There is an apocryphal story to emphasize the need to keep our mind busy with benevolent plans.

A wealthy landlord was approached by a young man for a job. When asked about salary, the young man said that he wanted only work and no salary at all. But, after a pause he was quick to add "This comes with a rider. I should be kept busy all the time and if at any time I am without work, I will kill you."

Trivikrama Mahadeva

He ferries unclaimed bodies and organizes their funeral. He has so far organized funeral of over 42,000 human bodies. In November 1999, he was awarded the Chief Minister's Gold Medal by the Chief Minister

Youngman's offer was manna from heaven for the landlord so he lost no time in employing him. On the first day he completed the assigned jobs with in one hour and went to his master for more work. The master was not only astonished but was very happy as it opened up the possibility of his getting rid of other employees. Next day, as per his plans, he lost no time in removing his other employees and gave their work to the new servant. But, the servant was so efficient that even after completing the work of other employees he was free and looked to his master for more work.

Now the landlord was a worried man. Servant's job condition that if not kept busy all the time he would

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

kill him started haunting him. He shared his anxiety with one of his friends, who after giving a thought said," I've a solution to your problem. Don't confine your servant to doing only your personal jobs. Involve him in the jobs which may benefit your entire community and still if he has time, he can be given the jobs which may benefit your entire village. This way he will remain busy and you can live happily as it will get you tremendous goodwill as well."

Same is the condition of our mind. If kept centered on self, there is every chance of its remaining idle and generating negative thoughts. But, if we come out of the self imposed self-centeredness and reach out to all those who influence our life in one way or the other, our mind will not only remain busy but will generate positive energy which can do wonders to our well being. This gets manifested by this example------suppose you have a domestic help. There can be two situations. In the first situation, you keep only objective relationship. She comes, performs the assigned chores and you pay her at the end of the month. In the second option, you interact with her, enquire about her family and children; their schooling and guide her so that children get right education. When you adopt the second path, you are developing a relationship and your mind is engaged in the benevolent cause.

The best way is to broaden the circle of your family to include even those withwhom you have only the relationship of humanity. It will weaken the shackles of your attachment with your own children which most of the times is a source of unhappiness in old age. This attachment gives birth to expectations from children and when these are met with disappointment and frustration, man finds himself in a state of unending mental agony.

Recently in our friend circle, an elderly woman died at the age of 90. For the last almost twenty years she had made it a practice to keep one or two needy boys in her home, who while attending college, would take care of her needs. For boys it was free stay and for the woman it means not living alone but in a family.

When she died most of the near and dear ones were seen criticizing her for ignoring her own children who were staying in USA and other far off places. But I differed --------in my opinion she was really wise & enlightened who instead of expecting her own children to provide companionship, which was not easy to come due to the distance involved, enlarged her circle of family by including even those with whom she had the relationship of humanity only.

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

हमने आत्मा को भुला दिया है

वे बारह यात्री थे। वे एक नगर से दूसरे नगर को जा रहे थे। आगे ब वे एक नगर से दूसरे नगर को जा रहे थे। आगे बढ़े तो नदी में बाढ़ आ गई। अब सब लोग घबराये कि नदी को कैसे पार करें? कोई पुल नहीं, नाव नहीं। पार जाना आवश्यक है, कैसे जायें? इनमें एक स्याना था। उसने कहा– "देखो, घबराओ नहीं, नदी को अवश्य पार करना है। सब लोग एक–दूसरे का हाथ पकड़ लो। हम सब मिलकर पार हो जायेंगे।" सबने ऐसा ही किया और एक दूसरे के हाथ पकड़ लिये। प्रयत्न करके पार हो गये।

किनारे पर पहुंचे तो स्याने व्यक्ति ने कहा–"अब गिनती कर लो कि कहीं कोई नदी में तो नहीं रह गया?" दूसरे ने कहा–"सबसे अधिक बुद्दिमान् तू ही है, तू ही गिन।" उसने गिनना आरम्भ किया–" एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह।" स्वयं को उसने गिना ही नहीं। चौंककर बोला–'ये तो ग्यारह हैं, एक व्यक्ति कहां गया?" दूसरे ने कहा–"ठहरो, मैं गिनता हूं।" उसने भी अपने–आपको छोड़ दिया। कहा–"ये तो ग्यारह हैं।" तब तीसरे ने गिना। उसने भी अपने–आपको नहीं, शेष ग्यारह को ही गिना। चौथे ने गिना, पांचवें ने गिना। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों ने गिना। किसी ने भी अपने–आपको नहीं गिना। सबने ग्यारह ही गिने ओर लगे रोने कि एक व्यक्ति डूब गया।

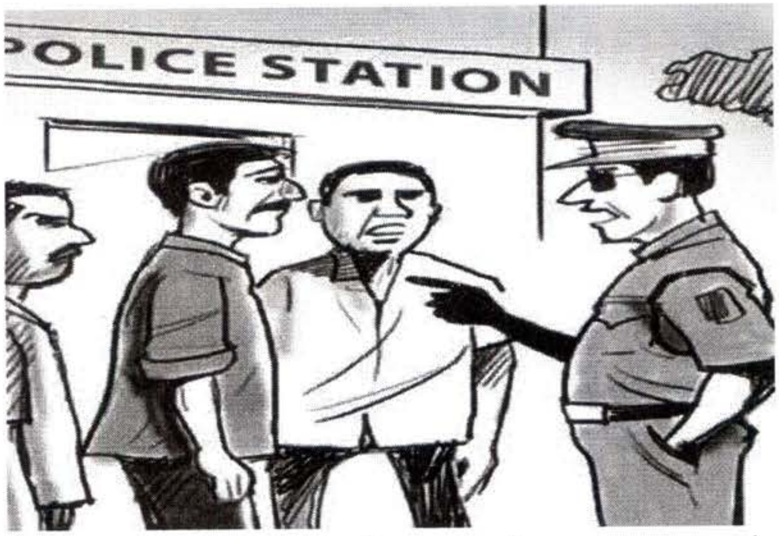

निजी लाभ के लिए आत्मा की आवाज को भूलना आम बात है

वे इस प्रकार रो रहे थे कि एक और यात्री उधर से निकला–उसने पूछा–"क्या हुआ भाई! तुम रोते क्यों हो।" उन्होंने कहा–"हम बारह थे। नदी को पार करते हुए एक व्यक्ति डूब गया। अब ग्यारह शेष रह गये हैं, इसलिए रोते हैं।" उस व्यक्ति ने एक दृष्टि में उन्हें देखा कि ये तो बारह है। तब बोला– "देखो! यदि मैं तुम्हारे बारहवें साथी को खोज दूं, तो?" वे बोले–"तब तो हम तुम्हें भगवान् मान लेंगे।" उसने कहा–"बहुत अच्छा। सब बैठ जाओ। मैं प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर चपत मारूंगा। जिसे पहली चपत लगे, वह कहे एक, जिसे दूसरी लगे, वह कहे दो। इस प्रकार सब बोलते जाओ।" वे सब बैठ गये। उस यात्री ने पहले व्यक्ति के मुख पर चपत मारकर कहा– "एक।" पहले ने कहा –"हां एक।" तब उसने दूसरे के मुंह पर चपत मारकर कहा–"दो।" दूसरे ने कहा–"हां, दो।" इस प्रकार उसने तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह–सब गिन डाले। अन्तिम यात्री ने कहा–"हां, बारह।" और सब प्रसन्न हो गये कि उनका बारहवां साथी मिल गया।

सबने चपत मारने वाले को कहा–"तू तो वस्तुतः भगवान् है।" आपको इन यात्रियों की मूर्खता पर हंसी आती है, परन्तु सोचकर देखो, हम स्वयं क्या कर रहे हैं? हम बारह यात्री चले थे जीवन की इस यात्रा पर–पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, ग्यारहवां मन और बारहवां आत्मा। हमने आत्मा को भुला दिया। ग्यारह–ही–ग्यारह दिखाई देते हैं। बारहवां दृष्टिगोचर नहीं होता। इन ग्यारह क लिए हम सब–कुछ करते हैं। प्रातः से सायं तक, सायं से प्रातःकाल तक परिश्रम करते हैं। आत्मा के लिए कुछ भी नहीं करते। इन ग्यारह को हम प्रत्येक प्रकार का भोजन देते हैं। आत्मा को हमने भूखा बैठा रक्खा है। आज आत्मा ही डूब गया है। अतः मनुष्य दुःखी है, अशान्त है, कहीं भी उसे शान्ति नहीं मिलत

*****

प्यार व मोह के अन्तर को समझें

मोह बन्धन में बांध दता है जब कि प्यार स्वतन्त्र विचरने की शक्ति देता है

जहां प्यार मनुष्य के लिये एक शक्ति है वहीं मोह उसकी कमज़ोरी व शत्रु है। शास्त्रों में मोह को व्यक्ति का उतना ही बड़ा शत्रु बताया है जितना कि काम, क्रोध, लोभ व अहंकार को। हमारा मन असंख्य इच्छाओं से भरा रहता है। धन, वैभव, प्रतिष्ठा व नाम की ईच्छा कभी पूर्ण होती प्रतीत नहीं होती व

अक्सर यह क्रिया असन्तोष, क्रोध व निराशा को जन्म देती है। प्रकृति व जीवन के सौन्द्रर्य के सुख का आनन्द लेने के स्थान पर हम इन भौतिक ईच्छाओं के पीछे भागते रहते हैं और यह दौड़ कभी खत्म नहीं होती। यह भी सम्भव नहीं है कि हम किसी भैतिक वस्तु की इच्छा न करें। पर हम इतना अवश्य कर सकते हैं कि हम अपनी भैतिक ईच्छाओं को कम करते जायें। ऐसा करने पर दो चीजें होगीं पहला इच्छाऐं बढ़नी बन्द हो जायेंगी दूसरा यदि आप में तप, त्याग व ईश्वर का सनिध्य है तो इच्छाऐ आहिस्ता– आहिस्ता खत्म हो जायेंगी।

हमारा मोह चाहे भैतिक वस्तुओं से है या प्राणीयों से, यह न केवल हमें नुकसान पहुंचाता है अपितु उस को भी नुकसान पहुंचाता है जिस के साथ हम मोह करते हैं, खास कर जो यह नहीं जानते कि संसार में हर चीज नश्वर है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि धन हर काम के लिये चाहिए। हमें धन को फैंकना नहीं है, फैंकना है धन के साथ मोह व लगाव को व धन के लोभ को। धन व दुसरी भौतिक वस्तुऐं साधन होने चाहिए न की हमारा उदेश्य। यह भी सत्य है कि हम अध्यात्मवाद को तभी अच्छा समझ सकते हैं जब हम भैतिकवाद से गुजर चुके होते हैं। जब संसार के सब भौतिक सुख प्राप्त कर के भी व्यक्ति को खोखलापन महसूस होता है तो उस के पग अध्यात्मवाद की और बढ़ते है और वह अन्दर की और देखना शुरू करता है।

कई बार हम अपने मोह के कारण बच्चों की प्रगति के रास्ते में बाधा बन जाते हैं। मूल शंकर के माता पिता का मोह भी ऐसा ही था। एक दिवान के पुत्र होने के नाते सब सुख व एंश्वर्य

उसके कदमो पर था। पर उसने उस मोह को ठुकरा दिया व वह लोगों को रास्ता दिखाने वाला दयानन्द बना। इस लिये अपने प्यार को मोह के जाल में न बदलें। आचार्य चाण्क्य नीतिवचन में कहते है मोह के समान शत्रु नही। गुरूवर रविन्दर नाथ टैगोर ने बहुत ठीक कहा है----"प्यार तो स्वतन्त्रता देता है न की बन्धन" । जो भी महान पुरूष हुये हैं उन्होने जीवन के किसी मोड़ पर मोह के जाल को ठुकराया, तभी वह महान बने। अगर श्री रामचन्द्र राजगददी के मोह में पड़ जाते तो शायद मर्यादा पुरषोतम रामचन्द्र न कहलाते। इसी तरह अगर गुरू नानक देव अपने पिता के व्यापार के अन्दर आ जाते तो गुरू नानक देव न बनते। तुलसी रामायण के रचयिता न बनते अगर वह पत्नि के मोह मेंुसे रहते।

इस से एक ही शिक्षा मिलती रहती है कि हम अपने प्रिय जनों से जिनमें हमारे अपने बच्चे भी आतें प्यार करें पर मोह नहीं। मोह एक स्वार्थपूर्ण प्यार है। मोह में फंसा व्यक्ति अकसर छला जाता है। शास्त्रों में एक कहानी आती है----एक राजा की दो रानीयां थी। छोटी वाली रानी बड़ी रानी से न केवल उमर में काफी छोटी थी पर उससे कहीं अधिक सुन्दर थी। जब की बड़ी रानी गम्भीर रहने वाली थी और राजा का शासन व्यवस्था में हाथ बटवाती थी। एक बार ऐक सन्यासी राजा के पास कुछ समय ठहरे। अपनी सेबा से प्रसन्न होकर जाती बार उन्होने राजा को एक गिलास दिया और कहा जिस के पास भी यह गिलास रहेगा वह सदा जवान रहेगा। राजा अपनी छोटी रानी के मोह में फंसा हुआ था, उसने सोचा वह सदा जवान रहे इस से अच्छी और कोई बात नहीं और वह गलास राजा ने छोटी रानी को दे दिया व साथ में ही उस गलास का राज भी बता दिया। राजा ने इस बात का तनिक भी ख्याल न रखा कि बड़ी रानी के साथ उसने जीवन के कंहीं अधिक बसंत गुजारे है और अगर उसकी राज्य की व्यवस्था अच्छी है तो उसका असली श्रेय बड़ी रानी को ही जाता था।

छोटी रानी के नजायज सम्बन्ध राज्य के सेनापति के साथ थे। वह उस के मोहजाल में फंसी हुई थी। उसने सोचा सेनापति सदा जवान रहे इस से अच्छी और कोई बात नहीं और वह गलास रानी ने सेनापति को दे दिया व साथ में ही उस गलास का राज भी बता दिया। सेनापति राज्य की मुख्य नर्तकी पर फिदा था उसने वह गलास वैसा ही सोचकर नर्तकी को दे दिया। नर्तकी चाहे नर्तकी थी पर ज्ञानवान थी अज्ञान से पैदा हुए मोहजाल को समझती थी। उसने विचार किया और इस निष्कर्श पर पहुंची कि एक व्यकित जिस के पास यह गलास रहना चाहिए वह है बड़ी रानी जिस के कारण राज्य की व्यवस्था इतनी अच्छी थी अगर वह दीर्घ आंयु प्राप्त करती है तो राज्य के लिए इस से अच्छी बात और कोई नहीं हो सकती और उसने वह गलास रानी के चरणों में भेंट कर दिया। रानी के लिये उसके पति से बड़ कर कोई नहीं था व उसने तुरन्त वह गलास राजा को तोहफे में दे दिया। राजा स्तबद रह गया। उस ने जब वही गलास देखा तो उसके पैरों तले ज़मीन खिस्क गई उसकी आंखे खुल गई उसे मालुम हो गया कि कैसे वह अपने मोह के कारण छला जा रहा था। राजा ने वैराग ले लिया पर हम सब वैराग नहीं ले सकते। जो हम कर सकते हैं वह है प्यार को, मोह के जाल में न बदलें।

यह भी सत्य है कि हम सभी कहीं न कहीं मोह के जाल में फंसे हुये हैं। यह जाल ऐसा है कि हम उसे स्वयं नहीं समझ पाते। जब कोई दूसरा हमें इस बारे में जगता है तो हमें वह अपना शत्रु लगता है , पर जब कि वह हमारा सच्चा हितैशी होता है। इसका एक ही उपाय हैं वह है कि हम जीवन के सत्य को समझें। जीवन का सत्य है मृत्यु । मृत्यु के साथ ही यह सब रिश्ते खत्म हो जाते है, सभी कुछ यहीं रह जाता है।। इस लिये जिसके साथ भी मोह में बन्धे है , यह सोच अवश्य दें कि जब मैं नहीं हूंगा तब इसका क्या होगा। यही सोच आपको मोह से सवतन्त्र कर सकती है।

*****

Oh God, Make my mind a reservoir of good thoughts

Neela Sood

Sometimes back my father's friend who is devoted to altruistic pursuits came to our house. He was quite old so my youngest daughter took special care of him as she'd do for her grandfather. He was immensely pleased with my daughter's conduct. The day he was to leave he made my daughter sit close to him and said, " I know your mentoring is very good but still I'll like to leave an advice for you which if followed will always keep you happy."

I was listening to their conversation and out of curiosity I also joined them. Then he said, " When you get up in the morning and go to bed in the night, make it a habit to pray to God and while seeking His benevolence ask him to make your mind a reservoir of good thoughts only."

Continuing he said, "When your thoughts are good your tongue will be sweet. What you speak will be pleasing to others since our thoughts become our words. When your speech creates positive vibes your actions automatically become noble since our words become actions. When your actions are good your habits will also be good since our actions slowly take the shape of our habits. And you know it is our habits which shape our character and it is our character which goes to design our destiny. Therefore it is very important that we think well and do not allow the bad, depressing and negative thoughts to enter our mind."

Nothing manifests it better than the Duryodhna of Mahabharata epic. His mind was the fountain head of sinful thoughts and rest we all know. In the face of this Yudhishtra's mind would always breed noble thoughts. It not only kept pandava on virtuous path but ultimately won them the war against formidable foes.

In Yazur veda a sukta " tanme mana shiv sankalpam astu "is repeated time and again which coneys that let our mind be a reservoir of good thoughts.

*****

मेरे साथ ऐसा नहीं होगा। लेकिन क्यों?

सीताराम गुप्ता

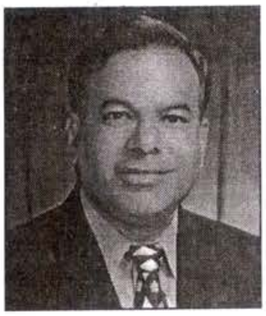

महाभारत की कथा में एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग है यक्ष–प्रश्न। पांडवों के वनवास के अंतिम दिनों की घटना है जब वन में उनका सामना यक्ष से हुआ और उसके प्रश्नों का उत्तर दिये बिना सरोवर से पानी पीने के प्रयास में नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम ये चारों भाई मृतप्रायः होकर वहीं गिर पड़े। बाद में युधिश्ठिर ने यक्ष के सभी प्रश्नों का सही उत्तर देकर अपने भाइयों की रक्षा की। यक्ष द्वारा युधिश्ठिर से पूछे गए महत्त्वपूर्ण प्रश्नों में से एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह भी था कि संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है?

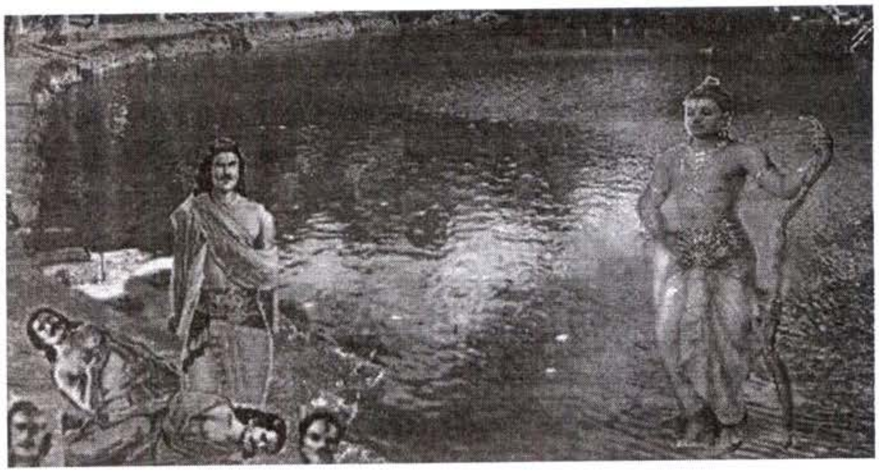

युधिश्ठिर ने इस प्रश्न का उत्तर दिया कि हर रोज़ हमारी आँखों के सामने न जाने कितने लोग मृत्यु के मुख में समा जाते हैं लेकिन फिर भी हममें से बचे हुए लोग यही कामना करते हैं कि हम अमर रहें। यही संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है। इस संसार में जो आया है उसे एक न एक दिन इस संसार से जाना ही होगा लेकिन फिर भी इस प्रकार का आचरण करते हैं कि जैसे उन्हें सदा ही यहाँ रहना है और मृत्यु उनके लिए नहीं है।

यक्ष द्वारा पूछे गए अन्य प्रश्नों के साथ–साथ ये प्रश्न आज भी हमारे समक्ष उस काल के समान ही विद्यमान है। प्रश्न इतने महत्त्वपूर्ण थे कि आज यक्ष–प्रश्न एक मुहावरा अथवा प्रतीकात्मक शब्द बन गया है। न केवल यक्ष द्वारा युधिश्ठिर से पूछा गया प्रश्न कि संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है तथा अन्य प्रश्न आज भी हमारे सम्मुख उत्पन्न व उपस्थित हैं अपितु आज की परिस्थितियों के अनुसार अनेकानेक दूसरे नए यक्ष–प्रश्न भी हमारे सम्मुख उत्पन्न व उपस्थित हैं जिनका उत्तर खोजना अनिवार्य प्रतीत होता है।

यदि आज के संदर्भ में पूछें कि संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है तो एक उत्तर तो यही मिलेगा कि जो लोग अपराधों में लिप्त होते हैं वो अवश्य पकड़े जाते हैं और उन्हें सज़ा भी मिलती है लेकिन फिर भी जो लोग कतिपय कारणों से आज तक गिरफ्तार में नहीं हुए वो ये सोचते हैं कि हम थोड़े ही पकड़े जाएँगे। है न आश्चर्य की बात? आज समाज में पहले के मुक़ाबले विभिन्न प्रकार के अपराधों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। अपराधों से ही नहीं अपराधियों को सज़ा देने से भी सामाजिक ढाँचा चरमरा जाता है जो स्वस्थ समाज के विकास में बाधक है।

आज नैतिक मूल्यों का ही क्षरण नहीं हो रहा है अपितु अनेकानेक सामाजिक व आर्थिक अपराधों में भी वृद्धि हो रही है। बात कहकर पलट जाना, वादा करके मुकर जाना, अमानत में ख़यानत,

कमज़ोर का आर्थिक शोंशण, सामाजिक–आर्थिक नियमों की अनदेखी, सरकारी संपत्ति का ग़बन, पद व स्थिति का दुरुपयोग, टैक्स चोरी, रिश्वत का लेन–देन आदि की बात छोड़िए बलात्कार, चोरी, डकैती, अपहरण और हत्या जैसे संगीन अपराधों को भी लोग बेख़ौफ़ होकर अंजाम दे रहे हैं।

लेन–देन में विवाद होने पर मात्र कुछ रुपयों के लिए किसी की हत्या कर देना, अवैध प्रेम–प्रसंगों के चलते पत्नी अथवा पति की हत्या कर देना अथवा करवा देना, अपने प्रतिद्वंद्वियों अथवा विरोधियों को मरवा डालना आम बात हो गई है। दहेज़ कानून अत्यंत सख़्त होने के बावजूद दहेज़ के लिए हर साल अब भी न जाने कितने व्यक्ति अनेकानेक युवतियों को जलाकर अथवा गला घोंटकर मार डालते हैं और स्वयं जिंदगी भर जेल में सड़ने को अभिशप्त हैं। यह आज के संसार का एक महानतम आश्चर्य नहीं है तो और क्या है?

पिछले दिनों देश की राजधानी अथवा अन्य बड़े शहरों में हुई चर्चित डकैतियों, अपहरण और हत्याओं पर नज़र डालिए। अपराधियों ने बड़ी चतुराई से इन घटनाओं का ताना–बाना बुना लेकिन एक भी ऐसा केस नहीं जिसमें अपराधी अथवा हत्यारे न पकड़े गए हों। इसके बावजूद नए अपराधी व हत्यारे पैदा हो जाते हैं और अपने कुकृत्यों के परिणामस्वरूप अपना जीवन नरक बनाने को विवश होते हैं। यह आज के समाज व संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य ही तो है।
उर्दू के मशहूर शायर 'आतिश' का एक शेर है :

काश! ये जमशेद को मालूम होता जाम में,
कासा–ए–सर, कासा–ए–दस्ते–गदा हो जाएगा।

जमशेद ईरान का एक प्रसिद्ध बादशाह था। उसके पास एक ऐसा प्याला था जिसमें वो सारे संसार के भूत, भविष्य और वर्तमान का हाल जान लेता था। कहते हैं कि उसकी मौत के बाद उसकी खोपड़ी को एक भिखारी भिक्षापात्र के रूप में इस्तेमाल करता था। 'आतिश' इस शेर में कहते हैं कि काश! जमशेद अपने मशहूर जाम अथवा प्याले से अपने बारे में भी ये पता लगा लेते कि उनका कासा–ए–सर (खोपड़ीनुमा प्याला) कासा–ए–दस्ते–गदा (भिखारी के हाथ का प्याला) बन जाएगा।

हम सब की स्थिति भी कमोबेश कुछ–कुछ ऐसी ही प्रतीत होती है। हम सब भी अपने आप को सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान समझने की भूल करते हैं और अपने ज्ञान, अपनी ताक़त के सामने किसी को कुछ नहीं समझते। हम सबको एक दिन इस नश्वर संसार से विदा हो जाना है फिर भी हम अपने लिए एक ऐसा मुकम्मल बंदोबस्त करने की कोशिश करते हैं मानों हमें सदा के लिए यहीं रहना है। बंदोबस्त भी करते हैं तो लूट–खसोट और क़त्लो–ग़ारत के द्वारा। क्या कोई बंदोबस्त और ऐसा बंदोबस्त कभी स्थाई हो सकता है? ऐसा बंदोबस्त आज के समाज व संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?

वीरप्पन या लादेन जैसे कुख्यात दस्यु व आतंकवादी ही नहीं, अत्याचारी व निरंकश भ्रश्ट जनप्रतिनिधि भी निश्चित रूप से अपने ग़लत कार्यों की सज़ा भुगतते हैं। अपने पदों का दुरुपयोग कर अरबों–खरबों की संपत्ति का अनुचित संग्रह करनेवाले कई जनप्रतिनिधि और नौकरशाह आज जेलों में बंद हैं अथवा अदालतों में आरोपों का सामना कर रहे हैं। कर्नल मुअम्मर गद्दाफ़ी और सद्दाम हुसैन का जो हश्र हुआ वह किसी से छुपा नहीं है। कब तक दूसरों की आँखों में धूल झोंकते रहोगे? चलो दूसरों से तो बच गए पर अपने आपसे कैसे बचोगे? अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को कैसे अनसुनी करोगे? यदि हम अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को अनसुनी करने का प्रयास करते हैं तो यह सचमुच संसार का एक बड़ा आश्चर्य ही है।

कर्नल मुअम्मर गद्दाफ़ी जैसा सर्वशक्तिमान

व्यक्ति भी अपने अंतिम दिनों में जान बचाने के लिए छुपता फिरा, जूठन खाकर जीवित रहा और ऐसे जीवन की भीख माँगने के लिए भी रोया–गिड़गिड़ाया लेकिन इसके बावजूद भी उसे जीवन की भीख नहीं मिल पाई। एक अपराधी के लिए इससे बड़ी सज़ा और क्या हो सकती है? कुख्यात दस्यु, अपराधी व आतंकवादी को सज़ा मिलना कोई आश्चर्य की बात नहीं। हाँ, वो ये सोचें कि उन्हें सज़ा नहीं मिलेगी उनका ये सोचना इस संसार का एक बड़ा आश्चर्य हो सकता है।

रोम के सम्राट नीरो से लेकर हिटलर, मुसोलिनी, इदी अमीन और आज के हमारे बाहुबली जनप्रतिनिधियों तक सभी अपने आपको जायज़ ठहराने का प्रयास करते हैं। हम भी हमेशा अपने दुश्कृत्यों को जायज़ ठहराने का प्रयास करते हैं। हम प्रायः यही सोचते हैं कि हमारी बात और है। मैं अपराध करके बच जाऊँगा। मेरे साथ ऐसा नहीं होगा जो आम अपराधी के साथ होता है। लेकिन क्यो? क्योंकि मैं जिस स्तर तक झूठ बोलता हूँ, चोरी अथवा अन्य अपराध करता हूँ वहाँ तक जायज़ है, उससे ज़्यादा नाजायज़। जायज़ को सज़ा कैसे मिल सकती है? नाजायज़ को सज़ा मिलनी ही चाहिए। हम करें तो ठीक और वही काम दूसरा करे तो ग़लत। हम करें तो विवशता और अन्य कोई करे तो अपराध। इस प्रकार की ख़ामख़याली में जीना भी किसी बड़े आश्चर्य से कम नहीं कहा जा सकता।

दोहे

जब जीवन की नाव पर लदता ज़्यादा भार,
रहती डावाँडोल वो नहीं पहुँचती पार।
मन में जो भी व्यथा है बाँट सभी के संग,
नहीं बाँटने से उसे पीड़ा व्यापे अंग।
जो अपने वष में नहीं उसकी चिंता त्याग,
कर सकता जो आप खुद दूर न उससे भाग।
जो जीवन पथ पर चलें अपने मन को साध,
होता उनका ही सदा, जीवन पथ निर्बाध।
मत खुद को कमज़ोर कह बहुत बड़ा ये रोग,
चढ़ जाते एवरेस्ट पर एक पाँव से लोग।
करता है आलस्य जो बंद रखता जो कान,
पछताता है बाद में, होता जब नुक़सान।
खाली कभी न बैठिए करते रहिए काम,
काम अधूरा जब तलक, है आराम हराम।
दक्षिण में जमकर करो हिन्दी का प्रचार,
मलय तमिल का भी करो उत्तर में विस्तार।
जिनके मन होता नहीं किसी तरह का खोट,
कर पाते हर काम ही वो डंके की चोट।
नहीं किसी को चाहिए भीख और ख़ैरात,
रोज़गार सबको मिले करिए ऐसी बात।
टाँग खींचना और की दे बिल्कुल तू छोड़,
आगे बढ़ने के लिए कर परिश्रम जी तोड़।
संबंधों की नाव पर उतना लादो भार,
जिसे प्यार से ढो सको, बिना किए तकरार।
नहीं झूठ के पाँव हैं नहीं साँच को आँच,
जब चाहे तू देख ले जब चाहे तू जाँच।
स्वस्थ संबंधों के लिए रखना इतना ध्यान,
इक दूजे को दीजिए, पूरा पूरा स्थान।
संबंधों को चाहिए, देखभाल की खाद,
उदासीनता से सदा होते ये बरबाद।
संबंधों का रात दिन रखिए ख़ूब ख़याल,
तब जाकर होगा कहीं जीवन ये खुषहाल।
करना औरों की मदद जिसका हो स्वभाव,
जीवन में उसके कभी रहता नहीं अभाव।
संबंधों में उस समय आती नहीं खटास,
एक दूसरे में रहे, जब पूरा विष्वास।
बूढ़ा होना भाग्य ने, लिखा उसी के माथ,
बैठा है दिन–रात जो धरे हाथ पर हाथ।
कोरी बातों से यहाँ बने नहीं कुछ काम,
परिश्रम करना सीख ले खुद भी सीताराम।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 011–27313679 / **9555622323**

*****

बीमार नहीं है, फिर भी डरते हैं कोई जानलेवा बीमारी तो नहीं हो गई

डॉ. महेश पोरवाल

क्हते हैं हर चीज के फायदे हैं तो उसका गलत या अनुचित प्रयोग नुकसान भी कर सकता है। यही बात भारत के उच्च और मध्यम वर्ग में स्वास्थय की सुविधाओं को लेकर भी कही जा सकती हैं। इस बढ़ती हुई जानसंख्या में हर चीज व्यवसायिक हो गई है। लोगों में स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता पैदा करना बहुत अच्छा है पर उस का प्रयोग उनकी जेब खाली करने के लिये करना गलत है। यही हाल डाक्टरों का है, अपनी खुद की राय बनाने की बजाये वे टैस्ट रिर्पोटो पर भरोसा करना ठीक समझते है। इन टैस्टों का कोई अन्त नहीं । आगे से आगे चलते है, यही नहीं हर कोई डाक्टर पिछली रिर्पोटो को मानेने से इंकार कर देता है और अपनी पसंद की लैबोरेटरी से ही टैस्ट होने पर कोई राय देने के लिये राजी होता है। जब इतने सारे टैस्ट हो रहे हैं और शरीर के हर भाग के हो रहें हैं तो कहीं न कहीं कुछ कमी भी होगी ही, खास कर जब आप 50 बसन्त देख चुके हो। जब तक कमी नहीं मिली थी तो चिन्तित इस लिये थे कि क्यों नहीं पता लग रहा जब मिल गई तो यह सोच कर बिमार रहने लग पड़े कि मुझे तो बिमारी हैं, कहीं यह जान लेवा बिमारी न बन जाये। डाक्टर भी तीन चार महीने पैसे कमा कर यह कह कर पीछा छुड़ाता है कि आपके मन में ही बिमारी है, जो वह शुरू में भी जानता था। पर हमें सबर कहां हम किसी दूसरे डाक्टर को पकड़ लेते हैं और वही प्रक्रिया फिर शुरू हो जाती हैं। अगर कोई अच्छा ईमानदार डाक्टर शुरू में ही कह दें कि आप को कुछ नहीं, आप को वहम सता रहा है। तो हम कहेंगे ------अरे इस को तो कुछ आता ही नहीं। यह है आज अधिक पैसे और स्वास्थय सुविधाओं की कहानी। कहीं न कहीं तो पैसा लगाना है, अपने पर ही खर्च हो इस से अच्छी और क्या बात हो सकती है, 35 साल सरकार में काम किया, अगर सेवानिवर्ती के बाद 40 साल सरकारी सुविधाओं का प्रयोग नहीं किया तो बात क्या बनी, यही सब आदमी को और बिमार कर रहें हैं।

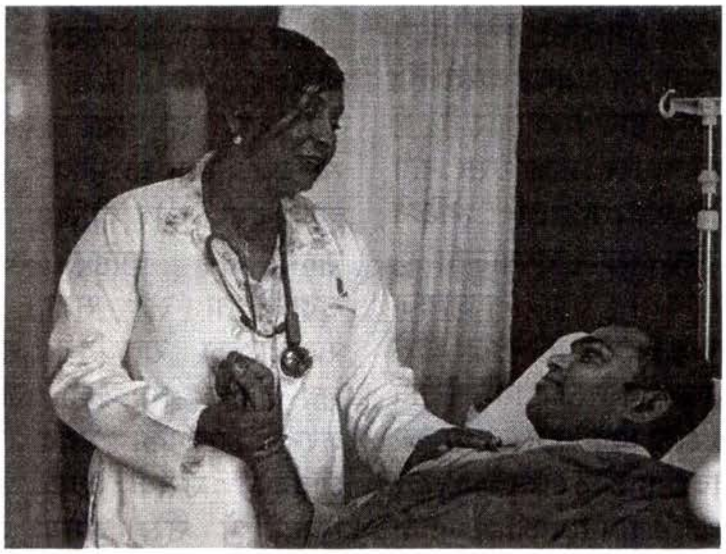

इस सारी किया का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि व्यक्ति बीमार न होते हुये भी अपने आप को बीमार समझता है जो कि कई तरह के तनावों ओर अवसादों को जन्म देता है। मझे एक व्यक्ति मिला , उसका कहना था------मैं वैसे बिल्कुल ठीक ठाक हूं, सब काम करता हूं, कभी कोई पीड़ा या तकलीफ नहीं होती पर मझे 98---99 के बीच ज्वर रहता है। चार डाक्अरों को दिखा चुका हूं, सभी ने खून की जांच पूरी तरह करवाई पर टैस्टों में कहीं भी कुछ नहीं आया। वे कहते हैं बिमारी तुम्हारे मन में है। पर मैं यह जानना चाहता हूं कि यह 99 ज्वर क्यों आता हैं और मैं जानकर ही चैन करूंगा। अगर आप ने किसी रिसर्च स्कोलर बनने का निश्चय कर लिया है तो बेचारे डाक्टर भी क्या करेंगे।

यह वह स्थिती होती है जहां हमारा ध्यान बीमारी और उसके उपचार की बजाये बीमारी पर केन्द्रित हो जाता है और हम अपना नुकसान करते रहते है। कोई बिमारी है तो उसका ईलाज अवश्य करवायें पर उसकी चिन्ता को अपने उपर हावी न होने दे। इसका समाधान है अपनी सोच को ठीक करना। यह विश्वास कि मैं स्वस्थ हूं आपने आप में ही एक बहुत बड़ी दवाई हैं और यह विश्वास आता है साकारात्मक सोच से ।

किसी ने बहुत सत्य कहा है
दिल की ही बदोलत रंज है,
दिल की ही बदोलत राहत
यह दुनिया जिसको कहते हैं
नरक भी है और जन्नत भी।।

वैसे जब व्यक्ति 50 वर्ष की आयु को पार कर जाता है तो अपने शरीर के बारे में जितना अच्छा वह स्वयं जानता है उतना अच्छा और कोइ या कोई डाक्टर भी नहीं जानता। मनुष्य को पता होता है कि क्या खाने से उसके शरीर में विकार आता है। क्या करने से और क्या सुनने से मन मे तनाव आता है। कितनी मात्रा खाने से वह स्वस्थ रहता है और कितनी मात्रा खाने से वह बिमार पड़ जाता हैं। पर मानसिक निर्बलता के कारण वह अपने खाने पीने पर अनुशासन नहीं रख पाता। अपने व्यवहार पर अंकुश नहीं लगा पाता। परिणाम स्वरूप वह बिमार महसूस करता है। अगर मुझ से कोई पूछे तो मैं यही कहूंगा, इसमें डाक्टर ने कुछ नहीं करना, आप ने ही सब कुछ करना है। इस चित की निर्बलता को छोड़ कर हम बहुत हद तक बिमारियों को और डाक्टरों को दूर सख सकते है।

बिमारी से ध्यान हटाने का सब से अच्छा साधन है, ईश्वर का ध्यान और उस पर पूर्ण विश्वास । ध्यान एक ऐसी प्रकिया है जो मस्तिष्क को विचारों को व्यवस्थित करना सिखाता है। जब विचारों व्यवस्थित हो जाते हैं तो अपने आप ही मन शात होने लगता है। ईश्वर पर पूर्ण विश्वास, जिसका अर्थ है वह दुनिया को चलाने वाला जो भी कर रहा है उस में ही हमारी भलाई है, एक ऐसी शक्ति है जिस का कोई मुकावला नहीं। यह न केवल मन को शांत रखती है पर मनुष्य ऐसा महसूस करता है कि कोई बड़ी शक्ति उस के जीवन को चला रही है।

*****

योग को ऋषि पतंजली द्वारा बताये ढंग से प्रारम्भ करें

आज जब सारे देश में योग की चर्चा है तो इस में शामिल होना हमारे हक में है। यदि आप भी इच्छुक है और यह विश्वास करतें हैं कि ऋषि पतंजली द्वारा बताई विधी ही ठीक है तो यहां से योग प्रारम्भ करें,

पहली सीढ़ी व दूसरी सीढ़ी

1 यह संकल्प ले कि दूसरों को मन, वाणी और अपने कर्म से दुख नहीं देंगें। इसे ऋषि पतंजली द्वारा आहिंसा कहा गया है।

2 सत्य बोलेंगे, चोरी नहीं करेंगे, ब्रहमचर्य का पालन करेंगे।

3 संचय वृति को त्यागेंगे; अर्थात अनावश्यक भौतिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करेंगे। इसे अप्रिग्रह कहा गया है।

4 शरीर की बाहर की अार वातावरण की सफाई रखेंगे, जिसे शोच कहा गया है।

5 भौतिक आकांक्षाओं के बारे में नीचे देखकर संतोष करना सींखेंगे और ईश्वर से यह कहेंगे----तूने मुझ को मालिक बहुत कुछ दिया है तेरा शुकरीया है, तेरा शुकरीया है।

6 तप करना सींखेंगे। दूसरे को सुख देने के लिये अपने भौतिक सुखों के त्याग करना पड़े तो करेंगे। जैसे माता पिता बहुत बार सन्तान के लिये करते है।

7 ईश्वरीय ज्ञान के स्वाध्याय को अपनी आदत बनायेंगे।

8 ईश्वर में पूर्ण विश्वास करते हुये ईश्वर की शरण में रहेंगे।

जब आप इनका अभ्यास करना प्रारम्थ कर देते है तो तीसरी साढ़ी आसन को अपनायें।

हां। आप **आसन** वैसे भी कर सकते हैं, कभी भी कर सकते हैं पर उसे **व्यायाम** कहें न कि योग।

श्री सुशील कुमार मागो

एक समर्पित आर्य समाजी समाजसेवी श्री मागो जी सैक्टर –32 चण्डीगढ़ आर्य समाज के अधिक्कारी है। मैं इन से बहुत प्रभावित रहता हू। कारण, यह बहुत शात ढंग से समाज सेवा में लगे रहते है। आर्य समाज के प्रचार हेतु बहुत बार यह हिन्दी और अंग्रेजी में किताबें छपवा कर मुफत बांटते हैं। भजनों के बहुत शौकिन है। भजनिको का प्रोत्साहन करते रहते है।

पर जो चीज सब से प्रशंसा के योग्य है वह यह है कि कई वर्षो से लगातार वह गरीब बच्चों को निशुल्क आर्य समाज के प्रांगन में टियुशन देते हैं

ईश्वर उन्हें अच्छा स्वास्थय व लम्बी आयु प्रदान करे।

आर्य समाज सैक्टर 32 में और भी बहुत समाज सेवी है जो कि बिभिन्न क्षेत्रों में समाज सेवां में जुड़े हैं। उनका परिचय भी आपको दूंगा। आपकी नजर में भी कोई ऐसा निस्वार्थ समाज सेवी हो, हमें फोटों के साथ विवरण भेजें। हम छापेंगे।

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

Truth is like oil in water. No matter how much water you add to depress it, it always floats on top

Happiness is like a butterfly. The more you chase it, the more it will elude you. But if you turn your attention to other things, it comes and softly sits on your shoulder."

John Keats, has said, 'Truth is Beauty and Beauty Truth,' that is all ye know on earth and that is all ye need to know.

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

सम्पादकीय

प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के तीन साल

14 मई 2014 के दिन पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 35 वर्षों के बाद भाजपा के साथ राजग गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिला था। इस नेतृत्व की खास बात यह थी कि भाजपा को अकेले ही 282 सीट हासिल हुई थी जिस कारण यह किसी दूसरे किसी घटक पर आश्रित नहीं थी और अपनी योजनाओं और उदेश्यों को कार्य रूप देने में सक्षम थी

पी एम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार अब तीन साल का लम्बा सफर तय कर चुकी है तथा अब इस सरकार के कामकाज का आकलन किया जा सकता है, और किया भी जा रहा है। भाजपा का संतोष इस बात से जाहिर होता है कि वह पूरे देश में जश्न मना रही है। हालांकि विपक्ष और कई दूसरे लोग सरकार के कामकाज को अपने ही नजरिये से देख रहा है ।

उपलब्धियों

अच्छा होगा पहिले सरकार की उपलब्धियों पर नजर डालें । सब से बड़ी उपलब्धी यह है कि सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ साकार कदम उठाये। जहां कांग्रेस की सरकार अन्नगिन्नत (भ्रष्ट काण्डों) स्कैमों से घिरी रही इस सरकार के मन्त्री ऐसे आरोपों से मुक्त रहे। इस का सारा श्रेय श्री मोदी को जाता है। जैसा राजा वैसी प्रजा यहां पर चरित्रार्थ होता है। यही नहीं नेताओं की गुणतवा में बहुत सुधार हुआ है। अधिकतर मंत्री पढ़े लिखे व अच्छी आचार संहिता और छवि वाले है। उन के र्निणयों पर तो प्रश्न उठाये जा सकते हैं पर मन्शाओं पर नहीं। जब कि पिछली सरकार में ऐसा वातावरण बन गया था कि कोई ईमानदार मन्त्री भी दूसरों को देखकर भ्रष्टाचार की तरफ जा रहा था, सारा आवा ही उत हो गया था और बहती गंगा में डुवकी मारने की संसकृति जोर पकड़ गई थी। इसका सब से अधिक फायदा प्रांतिय छोटे दलों के नेता उठा रहे थे। डी एम के जैसे दलों ने तो केन्द्र में मन्त्री बनने का अर्थ खुली लूट का लाइसेंस मिलना माना हुआ था।

छोटे दलों ने कांग्रेस के राज मे केन्द्र में मन्त्री बनने का अर्थ लूट का लाईसेंस मिलना माना हुआ था

दूसरी उपलब्धी यह है कि ऐसा लगता है कि सरकार अपने निर्णय अपने आप लेती है, निर्णय गलत या ठीक होना एक अलग बात है, कोई बाहरी शक्ति सरकार को नहीं चलाती या फिर प्रधानमन्त्री असहाय नहीं है जैसा मनमोहन सिंह की सरकार में हालत थी।

तीसरा, प्रधानमन्त्री

मोदी की स्वकारिता बहुत अधिक ही नहीं, पूरी है जो कि बहुत अच्छी बात है, और अच्छे शासन के लिये आवश्यक भी है। बाजपाई जी की स्वकारिता तो थी पर उनकी सरकार प्रमोद महाजन जैसे व्यक्ति चला रहे थे। मोदी स्वयं चलाते है।

चौथा प्रधानमन्त्री ने निर्णय लेने की क्षमता दिखाई, चाहे नतीजे कुछ भी रहें । यह अच्छे नेता की निशानी होती है। दो मुख्य निर्णय थे नोटबंदी और अब जी.एस.टी (GST) को लागू करना।

अब नजर डालें असफलताओं पर

सब से बड़ी असफलता उन क्षेत्रों में ही रही जिस का वादा करके मोदी ने चुनाव जीता था——नौकरियां या रोजगार पैदा करना। इस कदर असफल रहें कि स्वयं मोदी जी ने इस की बात करनी बन्द कर दी है। असलियत यह है कि नौकरियां कम हुई हैं। बेरोजगारी चरम सीमा पर है। हां सरकार भर्ती कर रही हैं पर उसका फायदा नहीं। शिक्षा पर 20——25 लाख खर्च कर भी लोग नोकरी पाने में असफल है। शिक्षा इस समय भारत का सब से बड़ा उद्योग बन कर रह गया है। जब कि शिक्षा तो एक साधन होना चाहिये न कि उद्योग। एक महौल बना दिया गया है जिसका सन्देश है—————एक डिगरी लो, फिर दूसरी लो,आगे से आगे लेते जाओ। अगर इजिन्यरिंग कर ली तो अब कैट की तैयारी कर के ऐम बी ऐ करो, एम बी ऐ कर ली तो कानून की पढ़ाई कर लो, मां बाप है तुम्हारी पढ़ाई का खर्च उठाने वाले।

सब से खराब बात यह है कि बच्चा इंजिनयरिंग कालेज में ऐडमिशन लेता है तो बजाये इसके कि दिल लगा कर इंजिनयरिंग की पढ़ाई करे , दूसरे साल में ही कैट की तैयारी शुरू कर देता है। बजाये इसके कि कानून की शिक्षा को ध्यान से पढ़े, पहले साल से ही ज्युडिशरी **(JUDICIARY)** की तैयारी शुरू कर देता है। जिस कारण उपज तो बहुत है पर गुणवता बहुत ही कम है।

कहां गया वह मेक इन इण्डिया?

कहां गया वह मेक इन इण्डिया, जो की हमारे प्रधानमन्त्री के भाशणों का सब से बड़ा मुददा होता था ? कहां गया स्टार्ट अप ? असलियत यह है कि जो मेक इन इंडिया पहले था भी वह भी खत्म होता जा रहा है ? पढो लिखो और विदेश जाओ यही रास्ता युवकों को नजर आ रहा है।

बिन मेहनत के जीने वालों को प्रोत्साहन मिल रहा है। आप हिंदुत्व की फोज के मैम्बर बन जाओं, घर बैठे ही पैसा कमाई का साधन बन जायेगा। स्कूल में हिसाब का साइंस और इंगलिश का मास्टर चाहे न हो इन योगा और संस्कृत बगैरा के अध्यापको की लाईन होगी।

नोटबन्दी ने हमारी अर्थव्यवस्था को सब से बड़ा धक्का पहुंचाया है। छाटे लोगों के धन्धे खत्म हो गये। जब धन्धे नहीं रहेगे तो नवयुवक अपराधीकरण की और अग्रसर होंगे, जैसा हम देख रहे है।

ऐक और गलत बात जो कि जोर पकड़ रही है वह है कि अगर आप किसी ओरगेनाईजड ग्रुप में है (Pressure group) के सदस्य है तो बात बात पर सरकार को झुका सकते हैं। आप हरियाणा की बात

ही लें। रोडवेज वाले निजी बसों को चलने ही नहीं दे रहे। और सरकार भी बार बार इनके आगे झुक जाती है। प्रश्न यह है कि शासन खटटर जी का है या फिर रोडवेज वालों का या जाट नेता मलिक का। जाट अन्दोलन में जिन ने बड़ चड़ कर हिंसा की उनके केस बापिस लिये जा रहें हे। यह हाल हर जगह है। चाहे किसान है या जवान। इस के विपरीत जो लोग 16 घंटे काम करके जिविका कमाते है उनकी मुश्किले बड़ती ही जा रहीं है। कोई उनके बारे में नहीं सोचता। एक और नई संसकृति पनप रही है, बैंक से लोन लो और वापिस न करो सरकार किसी न किसी दिन माफ कर देगी। इस को सरकार ही प्रोत्साहन दे रही है। जिस देश में भी ऐसी संस्कुति बन जाती है वहीं प्रगति नहीं हो सकती। जब तक पंजाब के किसानों को मुफत की बिजली नहीं मिलती थी, उनकी हालत अच्छी थी और जब से मुफत की बिजली शुरू हालत खराब होती गई। कारण मुफत की हर चीज खराब करती है।

एक और क्षेत्र जहां सरकार बुरी तरह असफल है वह है पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध। कोई भी पड़ोसी देश हमारा मित्र नहीं। हमारे देश का पांचवा हिस्सा है पाकिसतान, उसी पर हम अपनी सारी ताकत फूंकते जा रहे है। मोदी साहब ने शपथ समारोह में पड़ोसी देशों के हैडस को बुलाकर बहुत बड़ा नाटक कर लोगों को चकित कर दिया यही नहीं पहले साल में विश्व नेता बनने में पूरी शक्ति लगा दी पर तीन साल बाद सब ठुस है।

मोदी साहब की निजी सफलता

इन बिफलताओं के बावजूद मोदी साहब की सब से बड़ी सफलता यह है कि लोगों को उन्होने अपने प्रति आशावादी बना कर रखा है जा कि आसान नहीं। आप इसे कैसे देखते हैं यह आप पर निर्भर है। पर कितने समय तक यह जादू बना रहता है यह कहना मुश्किल है। सच्चाई यह है कि मोदी साहब का आलोचक होने के बावजूद अगर आज चुनाव होते हैं तो मैं भी उन्ही को वोट दूंगा कारण और कोई विकल्प नहीं। विपल्क की तो बात छोड़ो मोदी के धुटनो तक भी कोइ दूसरा नेता नहीं पहुंचता। बैंगन की सब्जी आपको चाहे पसंद न हो पर अगर बैंगन को छोड़ और कोई सब्जी नही है तो रोज बैंगन बनाओगे ही आज हालत यही ही है। इस बात को भी इंकार नहीं किया जा सकता कि मोदी जी का जीवन निस्वार्थ, त्यागमय और ईमानदार है जो कि राजनिती में किसी विरले का ही होता है। इन्ही गुणों के न होने के कारण तो मायावती पिट गई और खटटर महोदय योग्य न होने के बावजूद भी चल रहे है।

फिर भी यह कहना मुश्किल है 2019 में क्या होगा। व्यक्ति की साख गिरते देर नहीं लगती। केजरीवाल का उदाहरण सामने ही है। मोदी दूसरों की अपेक्षा बहुत सुलझ हुयें हे। उनके सामने विपक्ष है ही नहीं।

*****

A blow with a word strikes deeper than a blow with a sword.' Therefore think before you speak.

Call it a 'Jimnastik day'

Bhartendu Sood

On 21st June country is celebrated Yoga day. I can have no misgiving if our entire country assembles to perform exercises with leaders of Saffron outfits leading them from front with the hidden aim of pleasing our PM but my rant is for calling it a 'Yoga day', as explained.

There is no doubt that these exercises, aimed at toning up the body and muscles, do constitute one of the eight fold stages of *Ashtanga* Yoga called *'Asana'* as enunciated by Sage Patanjali, but they as such are not Yoga unless and until one follows other seven stages in the order as advised by sage Patanjali. When performed without embracing other equally important dictates of *'Ashtanga Yoga'* these are only physical exercises as one performs in Gym and these Yoga Gurus are at the best physical instructors. Again these *'Asnas'* can improve your looks and improve your internal systems with better figure and physical efficiency but it will be a sheer fallacy to think that performance of these *'Asanas'* can turn you in to a better human being what the performance of Yoga aims at in its true perspective..

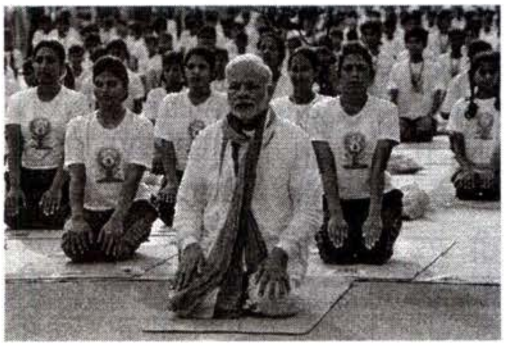

The eight stages of Ashtanga Yoga are *'Yam', 'Niyam', 'Asana', 'Pranayama', Pratihara' 'dhyana', 'dharana'* and finally *Samadhi* The five *'Yamas'* are -non-violence, truthfulness, non-stealing, celibacy and non covetousness and five *'Niyamas'* are cleanliness, contentment, austerity, self-study and surrender to God. As clear, *Yam and Niyam* advise for self restrain. *'Asana'* is the third stage. Sage Patanjali expected any Yogi to embrace *'Yam' and 'Niyam'* before coming to *'Asana'*. In other words Asana is only an exercise and not Yoga if it is not preceded by *'Yam'* and *'Niyam'* the first two stages of *'Ashtanga'* Yoga. These eight fold path of Yogic system are the codes for moral, physical spiritual upliftment (macrocosm and microcosm development). Thus Yoga involves conditioning and cultivation of both mind and body. The first five stages are concerned with the body and the brain and the last three, which would not be possible without the previous steps, are concerned with reconditioning the mind. They help the yogi to attain enlightenment or the full realization of oneness with God.

Enlightenment or Samadhi is synonymous with spirituality while a flat tummy or toned up muscles can be obtained by many methods not necessarily having any bearing on character, conduct or thinking of the man.

The Gita also speaks of the Yoga as the state of equanimity, a detached outlook, a unified outlook, serenity of mind, skill in action and the ability to stay attuned to the glory of the Self (Atman) and the Supreme Being (Bhagavan).

Irony is that our so called Yoga Gurus are well aware of it. They don't need a lesson from me but knowing that those who can correct them have no voice in the present regime, they continue with the business of making fool of masses. We have read about the appointment of 'Yoga Gurus' in the schools to appease saffron brigade. All I can say is that we don't need them when we have already physical instructors who are well equipped to do all these exercises what Yoga gurus perform. We are fast reaching a stage when in our Govt schools, where incidentally the children of lesser God study, there will be huge pile of Yoga teachers, Sanskrit teachers but hardly any English or Maths teacher as one can see in Haryana. I shall be happy if my piece puts the things in its right perspective and name is changed from 'Yoga day' to 'Jimnastik day'

*****

"संकल्प - एक अदभुत शक्ति"

मानव ईश्वर की अनमोल कृति है। लेकिन मानव का सम्पूर्ण जीवन पुरुषार्थ के इर्द गिर्द ही रचा बसा है। गीता जैसे महान ग्रन्थ में भी श्रीकृष्ण ने मानव के कर्म और पुरुषार्थ पर बल दिया है। रामायण में भी आता है 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' अर्थात् बिना पुरुषार्थ के मानव जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं, जो पुरुषार्थ के महत्व को प्रमाणित करते हैं। हम इतिहास टटोलकर देखें तो ईसा मसीह, सुकरात, अब्राहम लिंकन, कार्ल मार्क्स, नूरजहाँ, सिकंदर आदि ऐसे कईउदाहरण इतिहास में विद्यमान हैं, जिन्होंने अपने निजी जीवन में बहुत से दुःख और तकलीफें झेलीं। इनके जीवन में जितने दुःख और परेशानियां आईं, इन्होने उतनी ही मजबूती के साथ उनका मुकाबला करते हुए न केवल एक या दो बार बल्कि जीवन में अनेक बार उनका डटकर मुकाबला किया और अपने प्रबल पुरुषार्थ से उन समस्याओं और दुःखों को परास्त करते हुए इतिहास में अपना एक सम्माननीय स्थान बना लिया।

अबराहम लिंकन का नाम कौन नहीं जानता। जिस काम में भी उन्होंने हाथ डाला उसी में असफल हुए। रोजमर्रा के निर्वाह हेतु एक दूकान में नौकरी की तो दूकान का दिवाला निकल गया। किसी मित्र से साझेदारी की तो धंधा ही डूब गया। जैसे तैसे वकालत पास की, लेकिन वकालत नहीं चली। चार बार चुनाव लड़े और हर बार हारे। जिस स्त्री से शादी की उसके साथ भी सम्बंध बिगड़ गये और वह इन्हें छोड़कर चली गयी। जीवन में केवल एक बार उनकी महत्वाकांक्षापूरी हुई, जब वे राष्टंपति बने और इस सफलता केसाथ ही वे विश्व इतिहास में अमर हो गये।

सिकंदर फिलिप का पुत्र था कहा जाता है कि सिकंदर की माँ अपने प्रेमी के प्रणय जाल में इतनी अंधी थी कि उसने अपने पति फिलिप को धोखे से मरवा दिया और सिकंदर की भी अवेहलना की। मगर सिकंदर का इतना प्रबल पुरुषार्थ था कि उसने अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिणित कर दिया।

विख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टाइन जिसने परमाणु शक्ति की खोज की, वे बचपन में मूर्ख और सुस्त थे। उनके माता–पिता को चिंता होने लगी थी कि यह अपना जीवन कैसे चला पायेगा। लेकिन जब उन्होंने प्रगति पथ पर बढ़ना शुरू किया तो सारा संसार चमत्कृत हो गया।

एक मूर्तिकार का बेटा जो देखने में बड़ा कुरूप था उसने अपने जीवन की शुरुआत एक सैनिक के रूप में की और बहुत छोटी उम्र में उसके पिता का साया उसपर से उठ गया। अब उसकी माँ ही थी जो अपने पुत्र और अपने जीवन का निर्वाह दाई का काम करके करती थी। यही कुरूप बालक आगे चलकर सुकरात के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसने अपने पुरुषार्थ से दर्शनशास्त्र के जनक की उपाधि प्राप्त की।

ईसामसीह जिनके आज दुनिया में एक तिहाई अनुयायी हैं उनका जन्म एक बड़ई के घर में हुआ, लेकिन ईश्वर में अपनी आस्था और विश्वास के

द्वारा श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हुए सभी विघ्न बाधाओं को काटते हुए वे एक महामानव बने और लोगों के लिए सत्य का मार्ग अवलोकित कर गये।

भारत वर्ष को एक राष्टं के रूप में संगठित करने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म भी एक दासी से हुआ था। लेकिन उसे चाणक्य जैसे गुरु मिले और उनके बताये रास्ते पर चलते हुए वह अपने पराक्रम और पुरुषार्थ के द्वारा राष्टं को एक सूत्र में बांधने में सफल रहा।

प्रसिद्ध विचारक और दार्शनिक कन्फ्युशियस को तीन वर्ष की छोटी–सी उम्र में ही पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा था। अपने पिता को वो अभी ठीक प्रकार से पहचान भी नहीं पाया था कि वह अनाथ हो गया और छोटी सी उम्र में ही उसे जीविकोपार्जन के कार्य में लगना पड़ा। लेकिन बड़ा बनने की इच्छा उसमें प्रारम्भ से ही थी। यद्यपि 19 वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हो गया और तीन संतानों के साथ बड़ी गरीबी में उसने जीवन जिया, लेकिन अपने पुरुषार्थ और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण उसने चमत्कार कर दिखाया और महान दार्शनिक कहलाया।

कार्ल मार्क्स यद्यपि गरीब था और मरते तक उसने तंगहाली में ही जीवन जिया, लेकिन अपनी संकल्प शक्ति और दृढ़ विचारों द्वारा दुनिया के करोड़ों लोगों को अपने भाग्य का विधाता आप बना गया। उसने अपनी पुस्तक 'दास केपिटल' को सत्रह बार लिखा, अठारवीं बार में वह अपने उदात्त रूप में निकलकर बाहर आई और साम्यवाद की आधारशिला बन गयी।

अपनी संगठन शक्ति, दूरदर्शिता, दावपेंच और सीमित साधनों के बल पर औरंगजेब को नाकों चने चबवाने वाले शिवाजी के पिता शाहजी एक रियासत के दरबारी थे। शिवाजी को अपने पिता का किसी प्रकार का सहयोग या आश्रय नहीं मिला। उनका साहस केवल माता की शिक्षा और गुरु के ज्ञान पर टिका हुआ था। वे साहस और पराक्रम के बल पर स्वराज्य के लक्ष्य की ओर सफलतापूर्वक बढ़ते गये एवं यवनों से जूझकर छत्रपति राष्टांध्यक्ष बने।

हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के एक छोटे से गावं के गरीब परिवार में पैदा हुये। एक प्रचारक के रूप में जीवन प्रारम्भ किया। सन 2000 तक उन्होने कोई पद नहीं सम्भाला था। गुजरात के मुख्य मन्त्री बनाये गये पर कुछ ऐसी परिस्थितियां बन गई कि सब राजतनैतिक दल यहां तक की उनके अपने दल के भी बहुत सारे नेता भी उनके शत्रु बन गये। सारा मिडिया उनका सख्त विरोद्धि था पर मोदी अपनी संकल्प शक्ति से न केवल सफल मुख्य मन्त्री बने रहे परन्तु अपनी पार्टी के दिग्गजो को ही पीछे छोड़ प्रधानमन्त्री पद के दावेदार बने। इस में कोई संदेह नहीं किवे श्रीमती इन्दिरा गांधी को छोड सब से कामयाब प्रधान्मन्त्री है और विश्व की राजनिती में उनकी पहचान है।

सचमुच संकल्प एक एसी शक्ति है जिस के बिना का ही गुण धरे के धरे रह जाते हैं। और अगर संकत्प आप का दृड़ है तो थोड़े साधनों के साथ भी आप विजय ध्वज लहरा सकते हैं जैसा कि महाराणा प्रताप ने अकबर के विंका दिखाया था।

दृड़ संकल्प वाला अनुकूल परिस्थितियों की बात नहीं देखता,संकल्प प्रतिकूलताओंसे टकराना और अंदर छिपी सामर्थ्य को उभार कर आशातीत सफलता हर प्राप्त करने का मार्ग हैं।

*****

Take time to dream

It is said– "Take time to dream, it will hitch your wagon to a star."

Just think, if our ancestors had not dreamt of the comforts and facilities we enjoy today, we still would have been in the Stone Age

With dreaming comes progress. The aviation industry was born because the Wright Brothers dreamt of a world where humans would fly like birds. Both Edison and Einstein were thrown out of their schools. They were labeled as hopeless students by their teachers. But both of them left a golden mark on the history of science. How? They chose to dream differently. Managing academic degrees and grabbing effortless jobs like others was not what they expected out of their lives. Rather, their eyes were brimmed with higher visions. Someone has rightly said– 'Our eyes make the horizon.' Those who dream big can achieve far more.

"For those who dare to dream, there is a whole world to win!"

More recently, Bill Gates, again a school drop out, dreamt of a world where every person is connected wireless across the globe. With his imagination started the revolution of the lap-top and supersonic computer age.From the steam engine to generating solar power and from sky scrapers to CT Scanners, modern conveniences are all the incredible results of the man's ability to dream.

Given this unbelievable power in man's capacity to dream, great wonders could be unfolded with this one single weapon in his hands. Even so, seldom do ordinary men indulge themselves in the wise use of their dreaming powers.

The reason why man's ability to dream remains unexploited or partially tapped is probably due to the fact that as he grows older he loses out on his natural sense of curiosity, falling prey to life's nitty-gritty in the mundane world. He goes about the day with monotonous movements of daily routine and forgets dreaming. As the man grows, the inquisitive child in him becomes dormant and he lives like a zombie for much of his adult life. This type of life is not conducive to a vibrant dreaming.

It is a fact that man can dream when his mind is free and is wired to the surroundings with a curious bent. In 1901, H C Booth was sitting in a rocking chair on his front porch, watching the sun set. Living in the Midwest of America, he was also watching the dust blow. As he contemplated the scene, he wondered, "What if we could reverse the wind? Then instead of blowing dust, we could pull dust." Later that year, he invented the vacuum cleaner.

The full use of our imagination, therefore, needs to be tapped. A thinker has put like this, "If you don't dream, you live out of your potential."

Charles Dickens in his book "Hard Times" has beautif'lly portrayed the fact that fantasies help chil'ren become better human beings. They can empathise and handle real-life situations deftly..

In the musical South Pacific, there is a song called Happy Talk which says– 'Talk about things you'd like to do. If you don't have dream, how you gonna have a dream come true?' So, dream high, dream big

*****

देश में जाति आधारित जनगणना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण

विनोद स्वरूप, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

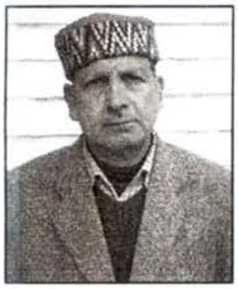

भारतीय समाज में बहुत पहले जन्म से जाति व्यवस्था नहीं थी। वर्ण व्यवस्था किसी और संदर्भ में थी। पुराने ऐतिहासिक नामों में कोई जातिगत उपनाम नहीं मिलता है। राम, कृष्ण, अर्जुन, दुर्योधन, बुद्ध, दयानन्द, महावीर, तुलसी, नानक, कबीर किसी भी नाम के साथ शर्मा, वर्मा, ठाकुर, कपूर, का प्रयोग नहीं होता था। बाद के युग में किन्हीं कारणों से जाति प्रथा का प्रभाव हुआ और धीरे–धीरे बढ़ता गया। एक देष और एक राश्ट्र की भावना कमज़ोर हुई। देष टुकड़ों में बंटता चला गया। मुठ्ठी भर विदेषी भारत में व्यापार के बहाने आए और देष को गुलाम बना दिया। सदियों की दासता की जंज़ीरों में भारत को जकड़ लिया। सभी महापुरुष जाति प्रथा को समाप्त कर समता का समाज बनाने का प्रयत्न करते रहे। जिसके लिए अनेक छोटे बड़े सामाजिक आन्दोलन शुरू हुए। उन सबका प्रभाव भी हुआ। धीरे–धीरे समाज को बांटने वाली ये दीवारें टूटती गईं और छोटी होती गईं।

अब अस्सी वर्ष पष्चात् देष की जनगणना में फिर से जाति को शामिल करने का प्रयत्न सचमुच अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। सर्वप्रथम 1872 से देष में जनगणना प्रारम्भ हुई और 1931 के पष्चात् जाति आधारित जनगणना कभी नहीं हुई तो फिर अचानक इस की आवष्यकता क्यों? लोकतन्त्र में वोटतन्त्र को मजबूत करने के लिए सभी दल मज़हब और जाति के नाम पर अपने वोट बैंक को तैयार करने में जुटे रहे लेकिन कई दलों ने तो इनके वोट को अपनी बपौती ही समझ लिया। एक तरफ हम जात–पात से मुक्त समाज की बात कर जातिवाद और जाति–द्वेश खत्म करने की बात करते हैं तो दूसरी तरफ वोट बैंक में उलझी राजनीति और लगातार बढ़ते आरक्षण के दायरे से जातिगत टकराव कम होने की बजाय बढ़ते ही दिखाई दे रहा है। जाति आधारित जनगणना के बाद जो आंकड़े निकलकर सामने आएंगे, वे इस तरह की बातों को बढ़ावा ही देंगे और देष में जातिगत भेदभाव घटने के बजाए और बढ़ेगा, यह एक बड़ी त्रासदी होगी।

अतः हमारा लक्ष्य जाति विहीन समाज का निर्माण होना चाहिए क्योंकि जाति व्यवस्था का स्वरूप समाज के लिए अभिषाप और अवनति का कारण बनेगा। उससे एक बार फिर 'मंडल आयोग' की संस्तुति लागू करने के समय हुए विग्रह की पुनरावृति की आषंक पैदा हो जायगी। स्वतन्त्रता के सातवें दषक बीतने के बाद भी जातियों को सन्तुष्ट करने के जो उपक्रम किये जा रहे हैं वे जातियों में वैमनस्य बढ़ाने के कारण समाज तोड़ो अभियान के रूप में प्रकट होगें और इससे पुराना संक्रमण फैलने की पूरी आषंका है। देष में जनगणना में जातियों को गिनने का फैसला अभी होना है। लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन भी मानती है कि जाति

आधारित जनगणना नहीं होनी चाहिए। समाज को जातिमुक्त ही होना चाहिए। भारत के 55ः लोग मानते हैं कि दल लोगों को बांटकर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकना चाहते हैं। जातियों का सहारा लेकर राजनीति करने वालों की लोगों को खूब पहचान है। आज आवष्यकता है जातिगत भेदभाव को समाप्त करने की, न कि जाने अनजाने उसे बढ़ावा देने की। जाति आधारित राजनीति को बल मिलने से सामाजिक सद्भाव का वातावरण दूषित हो सकता है। जब यह शंका है कि जातियों की गिनती से लाभ कम, हानि अधिक हो सकती है तो ऐसा काम करने से बचने में ही भलाई है।

ऐसी जाति आधार पर की जाने वाली जनगणना से लालू, मुलायम और माया जी आदि विभूतियें भले ही प्रसन्न हो जायें लेकिन इससे देष की एकता और अखण्डता पर प्रष्नवाचक चिन्ह लग जायेगा। देष के फूल की पखुड़ियों की तरह बिखरने का आसार बल पकड़ेगा। यदि ऋषिवर दयानन्द, महात्मा गांधी के स्वप्नों के भारत का निर्माण करना है तो जाति आधारित जनगणना को पूर्ण विराम देना होगा। कर्मों के आधार पर वर्ण व्यवस्था पर चलना होगा। वेदों के अनुसार सभी मानव एक ही परम पिता परमेष्वर की सन्तानें हैं। अतः हमें जाति विहीन समाज का निर्माण करके जाति–पाति के छोटे–मोटे और खोटे भेद भावों को सदा के लिये हिन्द महासागर में फैंक देना चाहिये। इस में ही भारत का भला है।

भविष्य पुराण के अनुसार सभी जातियों के सदस्य ईष्वर की संतान हैं इसलिए वे एक ही 'मानव' जाति से संबद्ध हैं। सभी मानव एक ही पिता की संतान हैं और एक पिता की संतान की अलग–अलग जाति हो सकती है क्या ?

*****

यक्ष युधिष्टर संवाद

ब्राहम्ण कौन है। क्या मनुष्य जन्म से ब्राहम्ण होता है?

बहुचर्चित यक्ष युधिष्टर संवाद के दौरान यक्ष युधिष्टर से पूछता है—— ब्राहम्ण कौन है। क्या मनुष्य जन्म से ब्राहम्ण होता है?

युधिष्टर इसका जवाब यूं देते हैं——— हे यक्ष जन्म से कौई ब्राहम्ण नहीं होता। अगर जन्म लेने मात्र से किसी व्यक्ति का पद व समाजिक सम्मान तय होने लगे तो गुण अवगुण, कर्म, योग्यता व प्रतिभा का प्रश्न ही खत्म हो जाता है।

ब्राहमण अगर पूजनिय है तो वह जन्म के कारण नहीं बल्कि शास्त्रों का ज्ञाता व अच्छे आचरण के कारण है यदि ब्राहम्ण घर में पैदा हुआ व्यक्ति ज्ञान और शिक्षा से वचित है तो वह काठ के हाथी के सामान है। जैसे काठ के हाथी से काम नहीं लिया जा सकता, वह बच्चों के खेल के काम ही आता है। वैसे ही विद्याा विहीन ब्राहम्ण मूढ़ लोगों के मन बहलाने के ठगने कत ही योग्यता रखता है।

स्वाध्यायशील ब्राहम्ण अगर तपस्वी है सुख दुख की परवाह किये बिना अपने कर्तव्य पालन में लगा रहता है तो वह आदर योग्य बन जाता है। केवल मात्र वेदों का ज्ञान प्राप्त करने से ब्राहम्ण आदर योग्य नहीं है। उसका आचरण भी उतना ही महत्व रखता है।

*****

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

PCA Ladies club with the Ashram children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा   लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Mr. Vidhur

Bhupinder Kumar Arora

Ankit

Darshana Devi Soni

Dr Anshu Sharma

Late Mrs Shardha Bhatia

Satish Khurana

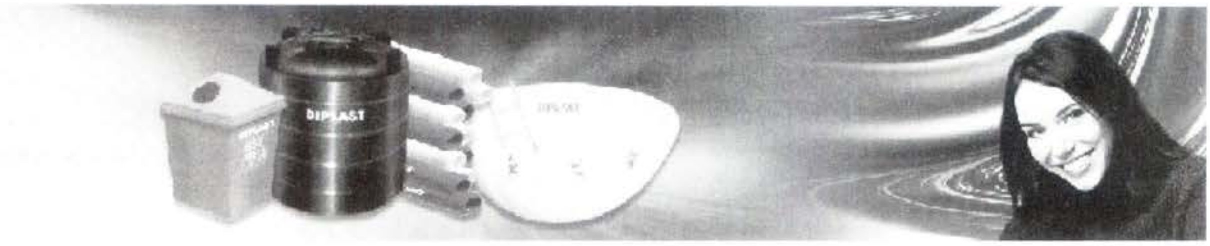

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in